# राष्ट्रीय एकता में संगीत की भूमिका

**DR. KIRTI GARG**
Department of Music, Himachal, Pradesh University, Summerhill, Shimla

## सार संक्षेपिका

राष्ट्रीय एकता में अन्य कई पहलुओं का योगदान रहता है लेकिन संगीत के द्वारा भी हम राष्ट्रीय एकता को बढ़ा सकते हैं। संगीत राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण योगदान देता है। संगीत की कोई भाषा नही होती। जो मन को छू ले, थिरकने के लिए उत्साहित करे और लोगों को एक–दूसरे से जोड़े वही संगीत है। संगीत से जो व्यक्ति जुड़ा होता है वह कभी भी हिंसक एवं विद्रोही नही हो सकता। हमें युवा वर्ग को विकास एवं राष्ट्रोन्मुख व राष्ट्रीय एकता में भागीदार बनाने के लिए उन्हें विशुद्ध भारतीय संगीत से जोड़ना होगा। हमें अपने संगीत को समाज के हर अवसर और हर व्यक्ति से जोड़ना चाहिए जिससे लोगों में संस्कारों के साथ–साथ एकता की भावना भी जागृत हो क्योंकि संगीत का एक गुण संस्कारित करना भी है।

## बीज शब्द

संगीत, राष्ट्रीय एकता।

## भूमिका

'संगीत' भारत की समृद्ध सांस्कृतिक सम्पत्ति का अंग है। यहाँ के संगीत पर विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव पड़ा लेकिन आज वही संगीत राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बना है। हमारे देश में जितने भी मेले त्यौहार, धार्मिक अनुष्ठान या राष्ट्रीय कार्यक्रम होते हैं, वे सभी संगीत से ओत–प्रोत रहते हैं। हमारे भिन्न–भिन्न प्रदेशों का संगीत एक कीर्ति सतम्भ ही नही अपितु राष्ट्रीय एकता का परिचायक है। भिन्न–भिन्न प्रान्तों से मिल कर हमारा देश बना है। जहाँ का संगीत चाहे वह लोक संगीत हो, शास्त्रीय संगीत, उप–शास्त्रीय संगीत, भक्ति संगीत या फिर फिल्मी संगीत ही क्यूँ न हो सभी प्रकार का संगीत जन–साधारण को बाँधने में और राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने में सक्षम हैं।

एक राष्ट्र एकता से बनता है। राष्ट्रीय एकता में अन्य कई पहलुओं का योगदान रहता है लेकिन संगीत के द्वारा भी हम राष्ट्रीय एकता को बढ़ा सकते हैं। संगीत राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण योगदान देता है। कहते हैं संगीत की कोई भाषा नही होती, जो मन को छू ले, थिरकने के लिए उत्साहित करे और लोगों को एक–दूसरे से जोड़े वही संगीत है। हिन्दुस्तान की राष्ट्रीय एकता में संगीत के महत्व व योगदान के इतिहास पर यदि हम अवलोकन करें तो पाते हैं कि चाहे वह प्रादेशिक संगीत या लोक संगीत हो, शास्त्रीय संगीत या सुगम संगीत हो, भक्ति संगीत या फिर फिल्मी संगीत, इन सभी ने हमें आज तक राष्ट्रीयता में बाँधा हुआ है।

## संगीत का राष्ट्रीय एकता में योगदान

हमारे देश का संगीत ऐसा है जो हमारी राष्ट्रीय एकता में बहुमूल्य योगदान देता है। अलग–अलग प्रान्तों का अलग–अलग संगीत होते हुए भी ये हमें एक डोर में बाँधता है। आज भी कई ऐसी गायन–वादन की धुनें हैं जो एक क्षेत्र विशेष की होने पर भी पूरे देश को एक माला में पिरोए हुए

है। जैसे उदाहरण के लिए हमारा राष्ट्रीय गान 'जन गण मन' जिसने राष्ट्रीय एकता का सबसे बड़ा उदाहरण दिया है। यह गीत बंगाल में उपजा और आज पूरे देश की आत्मा माना जाता है। इसी प्रकार हमारा राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' आज हमारी राष्ट्रीय एकता की जान है। हमारे देश में जिस प्रकार भिन्न–भिन्न समुदाय के लोग बसते हैं जैसे हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई इत्यादि इन सभी को इन राष्ट्रीय गीतों ने अपने शब्दों और संगीत से एक डोर में बाँधा हुआ है।

इसी प्रकार हमारे शास्त्रीय संगीत की भी राष्ट्रीय एकता में अहम भूमिका रही है। जैसे जब अलग–अलग प्रान्तों के संगीत कलाकार एक–दूसरे प्रान्तों में अपने शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं तो एक अलग ही भाई–चारे की भावना उत्पन्न होती है। एक–दूसरे से बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त होता है और इस प्रकार एक–दूसरे के संगीत के प्रति सम्मान की भावना जागृत होती है जो बाद में राष्ट्रीय एकता का रूप ले लेती है।

हमारा लोक संगीत तो राष्ट्रीय एकता में महतवपूर्ण भूमिका निभाता ही है। प्रान्त–प्रान्त का लोक संगीत अपना एक अलग महत्व रखता है। फिर चाहे वह उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम का लोक संगीत हो। ये अलग–अलग प्रान्तों का संगीत और संस्कृतियाँ जब आपस में मिलती हैं तो एक बड़ी संस्कृति का रूप धारण कर लेती हैं, जिसे राष्ट्रीय एकता कहते हैं। एक–दूसरों के प्रान्तों में जाकर, एक–दूसरे के लोक संगीत, संस्कृति को समझ कर उसका सम्मान किया जाता है और एक सतरंगी इन्द्रधनुष बनता है जिसे राष्ट्रीय एकता कहते हैं।

आज जब हम अपने फिल्मी संगीत पर भी दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि फिल्मी संगीत का राष्ट्रीय एकता में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रहता है। जैसे आज ऐसे अनेक फिल्मी गीत है जिन्हें सुनकर हमारे अन्दर राष्ट्र के प्रति एक अलग ही प्रकार की उत्तेजना जागृत होती है। उदाहरण के लिए जैसे 'अपनी आज़ादी को हम हरगिज़ मिटा सकते नहीं,' सांगीतिक रचना पूरे देश के लोगों में चाहे वे किसी भी समुदाय के हों राष्ट्रीय एकता की भावना को जागृत करती है। इसी प्रकार अन्य कई सांगीतिक रचनाएँ ऐसी हैं जैसे 'तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा, इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा,' 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा,' 'देश प्रेमियों आपस में प्रेम करो देश प्रेमियों,' 'जहाँ डाल–डाल पर सोने की चिड़ियाँ करती हो बसेरा' इत्यादि। ऐसी अनेक फिल्मी सांगीतिक रचनाएँ हैं जो राष्ट्रीय एकता के संदेश को देती हैं।

इसी प्रकार हमारे संगीतज्ञों द्वारा ऐसी सांगीतिक रचनाएँ रची गई हैं जो वास्तव में राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बन गई हैं जैसे 'मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा,' 'बन कर गूँजे राग देश' इत्यादि। इस प्रकार संगीत राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

हमारे स्कूलों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में होने वाले संगीत कार्यक्रमों, देश भक्ति के समूहगानों, लोक संगीत के कार्यक्रमों आदि के द्वारा भी राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत होती है।

एक–दूसरे के साथ सांस्कृतिक संगीत कार्यक्रमों का आदान–प्रदान करने से भी एकता का मार्ग प्रशस्त होता है और भाईचारे की भावना जागृत होती है। अपने देश में ही नही यदि हम दूसरे देशों के साथ भी संगीत का आदान–प्रदान करते हैं तो उन देशों के साथ भी हमारे सम्बन्ध अच्छे और मज़बूत होते हैं।

## निष्कर्ष

संगीत से देश में तो क्या दो देशों के बीच भी एकता स्थापित की जा सकती है। अगर संगीत न हो तो मानव जीवन नीरस और संवेदनहीन हो जाएगा। ऐसा कहा जाता है कि संगीत से जो व्यक्ति जुड़ा होता है वह कभी भी हिंसक एवं विद्रोही नही हो सकता। हमारे यहाँ युवा वर्ग को विकास एवं राष्ट्रोन्मुख व राष्ट्रीय एकता में भागीदार बनाने के लिए उन्हें विशुद्ध भारतीय संगीत से जोड़ना होगा। हमें अपने संगीत को समाज के हर अवसर और हर व्यक्ति से जोड़ना चाहिए जिससे लोगों में संस्कारों के साथ–साथ एकता की भावना भी जागृत हो क्योंकि संगीत का एक गुण संस्कारित करना भी है। वैसे तो संगीत मनुष्य के जन्म के साथ ही उससे जुड़ जाता है। इसलिए यदि हम संगीत को मनुष्य और समाज के साथ जोड़ कर उसका प्रचार–प्रसार करें तो संगीत में इतना जादू है कि वह पशु–पक्षियों पर भी अपना प्रभाव डालता है तो मानव क्यूँ इससे प्रभावित न होगा। इसी लिए संगीत को राष्ट्रीय एकता का आधार कहना गलत न होगा।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

भार्गव सत्या (2010) राग सुगंध, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली।

रामास्वामी बी (2013) नैशनल इन्टीग्रेशन एण्ड कौमूनल हारमोनी, एल्फा पब्लिकेशन, दिल्ली।

कश्यप पूजा (2013) संगीत के प्रचार प्रसार में रेडियो तथा टीवी की भूमिका, *स्वर सिंधु*, 1(1): 51–52।